उर्दू आदर्श

अर्थात

उर्दू भाषा का बर्णन

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिम देशाधिप
श्रीयुत लफ़्टनन्ट गवर्नर बहादुर की
आज्ञानुसार

पश्चिम देश की पाठशालाओं के
श्रीयुत विज़िटर जनरल के
अनुशासन से

हिन्दी भाषा के विद्यार्थियों के लिये
पण्डित श्रीलाल ने
बनाया

आगरा
सिकंदरे के छापेख़ाने में छापा गया
सन १८५४ ईसवी

3,000 Copies: Price per Copy 2 Anas. } ३००० पुस्तक, फ़ी पुस्तक मोल ≡)

Urdū-Ādarśa
arthāt
Urdū-bhāshā-kā barṇan
[by]
Pandit LĀL.

Urdū Mirror
that is
Description of the
Urdū Language

Agra, 1854.

उर्दू आदर्श

अर्थात्

उर्दू भाषा का बर्णन

श्री मन्महाराजाधिराज पश्चिम देशाधिप
श्रीयुत लफ़टनेन्ट गवर्नर बहादुर की
आज्ञानुसार

पश्चिम देश की पाठशालाओं के
श्रीयुत विज़िटर जनरल के
अनुशासन से

हिन्दी भाषा के विद्यार्थियों के लिये
पण्डित श्रीलाल ने
बनाया

आगरा
सिकंदरे के छापेख़ाने में छापा गया
सन १८५४ ईसवी

उर्दू आदर्श

भूमिका

उर्दू यह शब्द तुर्की भाषा का है और उसका अर्थ छावनी है

उर्दू भाषा बहुधा फ़ारसी अक्षरों में लिखी जाती है परंतु उस बोली की परिपाटी हिंदी भाषा की परिपाटी से मिलती हुई है और वह उर्दू भाषा कई बोलियों अर्थात् अरबी - फ़ारसी - तुर्की - हिंदी और संस्कृत के शब्दों से बनी है कचहरी के संकेत और सर्कारी काम काज में जो शब्द आते हैं वे बहुधा

फ़ारसीअ़रबी के हैं और जो शब्द लोगों की साधा-
रण बोल चाल में आते हैं वे और जीवधारियों के
नाम बहुधा हिंदी और संस्कृत के हैं ॰

इस पुस्तक के बनाने का प्रयोजन यह है कि
इसके आसरे से हिंदी पढ़े लोग दूसरे की सहायता
बिन उर्दू पढ़ने में अभ्यास करसकेंगे और विशेष
श्रमकर पढ़नेका अभ्यास दृढ़ करेंगे तो उर्दू के व्या-
करण आदि की भी पुस्तकें पढ़ सकेंगे ॰

उर्दू पढ़ने की सहायता और शुद्धता के लिये
तसलीसुल्लुग़ात एक ऐसा कोश बनाया गया है
कि जिसमें व्याकरण की संज्ञा और बहुत से श-
ब्द भी उर्दू में लिखे हैं और उनका अर्थ हिंदीभा-
षा और देवनागरी में लिखा है ॰

और उर्दू मार्तंड एक ऐसी व्याकरण की पु-
स्तक बनीहै जिसमें फ़ारसी और अ़रबी व्याकर-
ण की संज्ञाओं का पर्याय संस्कृत में लिखकर

उसीकी व्याख्या भाषा में की है उस्से हिंदी उर्दू पढ़ने वाले दोनों का प्रयोजन निकल्ता है ॥

उर्दू बोली की उत्पत्ति यह है कि जब तक मुसलमानों ने आकर हिंदुस्थान में राज्य नहीं किया था तब तक इस देश में हिंदू राजा और हिंदू ही प्रजा थी और हिंदुस्थान का मध्य और उत्तर भाग जो सतलज से दक्षिण और पूर्व में है वहां के सब देशों में हिंदीही बोली थी परंतु जब मुसलमान फ़ारस से हिंदुस्थान में आये तब वे लोग अपनी देश भाषा फ़ारसी बोलते थे पर कुछ दिनों पीछे जब यहां के लोग उनसे हिलमिल गये और उनके आपस में आने जाने की रीत हो गई तो एक ऐसी बोली का प्रचार हुआ कि उसे दोनों ओर के मनुष्य समझने लगे और लोगों ने उस भाषा का नाम उर्दू रक्खा पहले तो

उर्दू इस रीतसे चली और तिस पीछे मुग़ल बादशाहों की सेना में बहुतसे पुरबिये लोग रहते थे उनके प्रसंग से हिंदुस्थान के देशों में क्रम क्रम से वह बोली फैलती चली गई ॥

फ़ारसी अक्षरोंकी वर्णमालामें ३२ हर्फ़ अर्थात् अक्षर हैं

फ़ारसी संज्ञा	अक्षरका रूप	उच्चारण	फ़ारसी संज्ञा	अक्षरका रूप	उच्चारण
अलिफ़	ا	अ	ज़े	ز	ज़
बे	ب	ब	ज़े	ژ	ज़
पे	پ	प	सीन	س	स
ते	ت	त	शीन	ش	श
से	ث	स	स्वाद	ص	स
जीम	ج	ज	ज़्वाद	ض	ज़
चे	چ	च	तोइ	ط	त
हे	ح	ह	ज़ोइ	ظ	ज़
ख़े	خ	ख़	ऐन	ع	अ़
दाल	د	द	ग़ैन	غ	ग़
ज़ाल	ذ	ज़	फ़े	ف	फ़
रे	ر	र	क़ाफ़	ق	क़

फ़ारसी संज्ञा	अक्षरका रूप	उच्चारण	फ़ारसी संज्ञा	अक्षरका रूप	उच्चारण
काफ़	ک	क	नून	ن	न
गाफ़	گ	ग	वाव	و	व
लाम	ل	ल	हे	ه	ह
मीम	م	म	ये	ي	य

इन ३२ अक्षरों में से ४ अक्षर अ़रबी की वर्णमाला से बाहर हैं अर्थात् अ़रबी शब्दों में ये अक्षर नहीं आते ॥

پ چ ژ گ

आठ अक्षर विशेष करके अ़रबी के हैं शब्द में उनके आने से शब्द अ़रबी का जाना जाता है ॥

ث ح ص ض ط ظ ع ق

शेष अक्षर फ़ारसी और अ़रबी दोनों में आते हैं ॥

हिंदी अर्थात् देवनागरी वर्णमाला के कितने ही अक्षर ऐसे हैं जो फ़ारसी वर्णमाला में नहीं हैं परंतु उर्दू में उनके लिखने का प्रयोजन पड़ता है वे इस रीत से लिखे जाते हैं ॥

संज्ञा	फ़ारसीकी लिखत	उच्चारण	संज्ञा	फ़ारसीकी लिखत	उच्चारण
खे	کھ	ख	डे	ڈ	ड
टे	ٹ	ट	ड़े	ڑ	ड़
थे	تھ	थ	फे	پھ	फ
घे	گھ	घ	नून	ن	ञ
ठे	ٹھ	ठ	झे	جھ	झ
धे	دھ	ध	ढे	ڈھ	ढ
नून	ں	ङ	भे	بھ	भ
छे	چھ	छ	नून	ں	ण

फ़ारसी में इन अक्षरों से विशेष (ऐराब) होते हैं जैसे हिंदी में लगमात होते हैं उनका ब्योरा नीचे लिखते हैं ÷

संज्ञा	स्वरूप	उच्चारण	वृत्तान्त	उदाहरण	
				हिंदी	फ़ारसी
ज़बर زبر	ـَ	अ	यह चिन्ह अक्षर के ऊपर लिखा जाता है	तब बल घर	تَب بَل گَھر
ज़ेर زیر	ـِ	इ	ज़ेर का चिन्ह ज़बर का सा है परंतु ज़बर अक्षर के ऊपर लगता है और ज़ेर नीचे	तिब बिल घिर	تِب بِل گِھر
पेश	ـُ	उ	यह अक्षर के ऊपर लिखा जाता है	तुब बुल घुर	تُب بُل گُھر
जज़्म	^		यह चिन्ह जिस अक्षर के ऊपर होता है वह साकिन अर्थात् हल् अर्थात् बिन मात्रा के हो जाता है	अब्र दर्द मस्कन	ابْر دَرْد مَسْکَن

संज्ञा	स्वरूप	उच्चारण	वृत्तान्त	उदाहरण	
				हिंदी	फ़ारसी
तशदीद تشدید	ّ		जिस अक्षर पर यह चिन्ह होता है वह द्वित्व बोला जाता है	सुन्ना पन्ना	سُنّا پنّا
तन्वीन تنوین	ً ٍ ٌ	अन् इन् उन्	दो ज़बर वा दो ज़ेर वा दो पेश होने से नकार का उच्चारण होता है	ऐज़न बैतिन कासुन	ایضاً بیتٍ کاسٌ
मद्द مد	~	आ	यह चिन्ह केवल अलिफ़ पर होता है और उसके होने से अलिफ़ का दीर्घ उच्चारण होता है अर्थात् वह आ बोला जाता है	आब आग आल	آب آگ آل
हमज़ह همزه	ء		यह (ऐराब) का चिन्ह उस स्वर की आदि में आता है जो शब्द वा शब्द के खंड की आदि में हो और जिस अलिफ़ पर (मद्द) होगी उसकी आदि में न होगा		

शब्द के खंड इस रीत से जान्ने चाहियें

खा	इस शब्द में एकही खंड है +
पा·नी	इसमें दो खंड हैं +
प·हा·ड़े	इसमें तीन खंड हैं +
चि·त्र·का·री	इसमें चार खंड हैं +
اَب अब	यहां शब्द की आदि में अलिफ़ है इसलिये उसकी आदि में हमज़ह आया +
آب आब	यहां अलिफ़ आदि में है परंतु उस पर मद्द है इस कारण हमज़ह न आया +
جاؤ जाओ	यहां दूसरे खंड वाव पर हमज़ह है +
اِب इब	ऐसे और भी जानो +

अलिफ़ आदि अक्षरों का स्वरूप शब्द के आदि मध्य और अंत्य में आने से एकसा नहीं रहता उसके दिखाने के लिये क्रम +

	शब्द के आदि में		शब्द के मध्य में		शब्द के अंत में	
	स्वरूप	उदाहरण	स्वरूप	उदाहरण	स्वरूप	उदाहरण
ا	ا	اب अब	ا	بار बार	ا	زا ज़ा
ب	بـ	بر बर	ـبـ	صبر सब्र	ـب	شب शब
پ	پـ	پر पर	ـپـ	سپر सिपर	ـپ	چپ चुप
ت	تـ	تپ तप	ـتـ	ستر सत्र	ـت	دست दस्त
ث	ثـ	ثور सोर	ـثـ	بشر बशर	ـث	روث रोस
ج	جـ	جبر जब्र	ـجـ	شجر शजर	ـج	کج कज
چ	چـ	چپ चुप	ـچـ	بچہ बच्चह	ـچ	ہیچ हेच
ح	حـ	حر हर	ـحـ	بحر बहर	ـح	صبح सुबह
خ	خـ	خر खर	ـخـ	تخم तुख़्म	ـخ	یخ यख़
د	د	در दर	ـد	فدا फ़िदा	ـد	صد सद
ذ	ذ	ذم ज़म	ـذ	نذر नज़र	ـذ	کاغذ काग़ज़
ر	ر	رم रम	ـر	مرد मर्द	ـر	مر मर
ز	ز	زر ज़र	ـز	بزم बज़्म	ـز	گز गज़
ژ	ژ	ژرف ज़र्फ़	ـژ	غژب ग़ज़ब	ـژ	کاژ काज़
س	سـ	سر सर	ـسـ	فسق फ़िस्क़	ـس	بس बस
ش	شـ	شد शुद	ـشـ	نشد नशुद	ـش	پش पश

	शब्द के आदि में		शब्द के मध्य में		शब्द के अंत में	
	स्वरूप	उदाहरण	स्वरूप	उदाहरण	स्वरूप	उदाहरण
ص	صـ	صد सद	ـصـ	قصد क़स्द	ص	نص नस
ض	ضـ	ضد ज़िद्द	ـضـ	حضر हज़्र	ض	بعض बअ़ज़
ط	طـ	طی तय्य	ـطـ	بطن बत्न	ـط	خط ख़त
ظ	ظـ	ظفر ज़फ़र	ـظـ	نظر नज़र	ـظ	حفظ हिफ़्ज़
ع	عـ	عسل असल	ـعـ	بعد बअ़्द	ـع	صنع सनअ़
غ	غـ	غسل ग़ुसल	ـغـ	بغي बग़ी	ـغ	تیغ तेग़
ف	فـ	في फ़ी	ـفـ	سفر सफ़र	ـف	کف कफ़
ق	قـ	قي क़ै	ـقـ	سقر सक़र	ـق	بق बक़
ک	کـ	کن कुन	ـکـ	بکن बिकुन	ـک	یک यक
گ	گـ	گر गर	ـگـ	جگر जिगर	ـگ	رنگ रंग
ل	لـ	لب लब	ـلـ	علم इल्म	ـل	گل गुल
م	مـ	من मन	ـمـ	چمن चमन	ـم	ستم सितम
ن	نـ	نم नम	ـنـ	چند चंद	ـن	صحن सहन
و	و	وجد वज्द	ـو	پور पूर	ـو	بو बू
ه	هـ	هنر हुनर	ـهـ	بهار बहार	ـه	نه नह
ي	يـ	يد यद	ـيـ	حيد हैद	ـے	بے बे

ऊपर जो क्रम लिखा है उस्से मनुष्य फ़ारसी और उर्दू का नस्तालीक़ अर्थात् अक्षरोंका स्वरूप बनाकर लिखा होगा उसे पढ़ सकेंगे परंतु ख़त पत्तर और सर्कारी काग़ज़ वग़ैरह शकस्तह में लिखे जाते हैं और शकस्तह का अर्थ फूटा टूटा है उस लिखनेको शकस्तह कहनेका कारण यही है कि उसमें अक्षरोंका रूप यथावस्थित नहीं होता कुछ बिगड़ा सुधरा होता है लोगों को शकस्तह बांचनेका अभ्यास हो इस लिये अलिफ़ आदि के अलग वा मेलमें जैसे रूप हो जाते हैं उन्हें दिखानेके लिये नीचे ऐसे उदाहरण लिख दिये हैं कि पहले ख़ाने में शकस्तह दूसरे में नस्तालीक़ और तीसरे में नागरी ॥

ا अलिफ़ के स्वरूप

वर्ण	शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
ا	است	است	अस्त
	اراده	اِراده	इरादह
	ہزار	ہزار	हज़ार
	خودرا	خودرا	ख़ुदरा
	گواه	گواه	गवाह
	پژمان	پژمان	पज़मां
	آماده	آماده	आमादह

ث ت پ ب बे·पे·ते·से·का स्वरूप

वर्ण	शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
ب پ ت ث	بنده	بنده	बंदह
	اثاثه	اثاثه	असासह
	عاقبت	عاقبت	आक़बत
	علت	علّت	इल्लत
	زبان	زبان	ज़ुबान

د ذ दाल·ज़ाल का स्वरूप

वर्ण	शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
د ذ	دونا	دونا	दूना
	گرداناد	گرداناد	गर्दानाद
	امتداد	اِمتداد	इम्तिदाद
	مزدوران	مزدوران	मज़्दूरान
	خود	خود	ख़ुद
	شد	شد	शुद
	باشد	باشد	बाशद

ر ز ژ रे·ज़े·ज़े का स्वरूप

वर्ण	शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
ر ز ژ	زار	زار	ज़ार
	سرکار	سرکار	सर्कार
	نگارد	نگارد	निगारद
	فروزان	فروزان	फ़रोज़ां

س ش सीन·शीन का स्वरूप

	शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
س ش	رسد	رسد	रसद
	باشد	باشد	बाशद
	شد	شد	शुद

ک گ काफ़·गाफ़ का स्वरूप

	शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
ک گ	ک / گ	ک گ	काफ़ गाफ़

ل लाम का स्वरूप

	शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
ل	منور الدولہ	منور الدولہ	मुनव्वरुद्दौलह
	اول	اوّل	अव्वल
	قایل	قایل	क़ायल
	سوال	سوال	सवाल

م मीम का स्वरूप

	शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
م	فرمایش	فرمایش	फ़र्माइश
	زمانہ	زمانہ	ज़मानह
	اندمال	اندمال	इंदमाल
	آزمایش	آزمایش	आज़माइश

ن नून का स्वरूप

	शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
ن	چن چون چن	چون	चूं
	این	این	ईं
	متضمن	متضمن	मुतज़म्मिन
	سخن	سخن	सख़ुन

و वाव का स्वरूप

	शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
و	چون	چون	चूं
	خود	خود	ख़ुद
	فرمود	فرمود	फ़र्मूद

ه हे का स्वरूप

	शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
ه	ـــــ	ـــہ	सिह
	ساده	ساده	सादह
	نموده	نموده	नमूदह
	پیوسته	پیوسته	पैवस्तह
	براه	براه	बराह
	پرسیده	پرسیده	पुर्सीदह

ي ये का स्वरूप

	शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
ي	قیمت	قيمت	क़ीमत
	چهره غیب	چهره غيب	चहरह ग़ैब
	اخی	اخي	आख़ी
	وی	وے	वे
	اولے	اولى	ऊला
	دیوالے	ديوالي	दीवाली

जिन नामों के लिखने पढ़ने का बहुधा लोगों को काम पड़ता है उन्हें शुद्ध जानना अवश्य है इसलिये नीचे वे नाम लिखते हैं ❖

शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
گورنر جنرل	گورنر جنرل	गवर्नरजनरल
لفٹنٹ گورنر	لفٹننٹ گورنر	लफ़टनेन्टगवर्नर
صدر بورڈ	صدر بورڈ	सद्र बोर्ड
کمشنر	کمشنر	कमिश्नर
کلکٹر	کلکٹر	कलकटर
ڈپٹی کلکٹر	ڈپٹی کلکٹر	डिपटी कलकटर
مجسٹریٹ	مجسٹریٹ	मजिस्टरेट
جنٹ مجسٹریٹ	جنٹ مجسٹریٹ	ज़ैंट मजिस्टरेट
اسسٹنٹ	اسسٹنٹ	असिस्टंट
جج	جج	जज
صدر اعلی	صدر اعلی	सद्र आला

शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
صدرامن	صدرامين	सद्रअमीन
منصف	منصف	मुनसिफ़
سررشته دار	سررشته دار	सररिश्तहदार
منشی	منشي	मुन्शी
ناظر	ناظر	नाज़िर
محافظ دفتر	محافظ دفتر	मुहाफ़िज़दफ़्तर
پیشکار	پيشكار	पेशकार
تحصیلدار	تحصيلدار	तहसील्दार
بخشی	بخشي	बख़्शी
قانونگوی	قانون گوي	क़ानूनगोय
فوطه دار	فوطه دار	फ़ोतहदार
جمعدار	جمعدار	जमअ़दार
دفعدار	دفعدار	दफ़अ़दार
چپراسی	چپراسي	चप्रासी

शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
مردھ	مردہہ	मिर्धह
دفتری	دفتري	दफ़्तरी
کوتوال	کوتوال	कोत्वाल
تهانہ دار	تهانہ دار	थानहदार
داروغہ	داروغہ	दारोग़ह
محرر	محرر	मुहर्रिर
مددگار	مددگار	मददगार
برقنداز	برقنداز	बर्क़न्दाज़
دستکی	دستکي	दस्तकी
پیادہ	پیاده	प्यादह
مذکوری	مذکوري	मज़कूरी
زمیندار	زمیندار	ज़मींदार
مالگذار	مالگذار	मालगुज़ार
مستاجر	مستاجر	मुस्ताजिर

शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
ٹھیکہ دار	ٹھیکہ دار	ठेकहदार
اجارہ دار	اجارہ دار	इजारहदार
ٹھاکر	ٹھاکر	ठाकुर
مقدم	مقدم	मुक़द्दम
چودھری	چودھري	चौधरी
پردہان	پردہان	प्रधान
شریک شکمی	شریک شکمي	शरीक शिकमी
حصہ دار	حصّہ دار	हिस्सहदार
ساجھی	ساجھي	साझी
کھیوا	کھیوا	खेवा
کسان	کسان	किसान
جوتا	جوتا	जोता
آسامی	آسامي	आसामी
پاہی	پاهي	पाही

शकस्तह	नस्तालीक़	हिंदी लेख
پٹواری	پٹواري	पटवारी
چوکیدار	چوكيدار	चौकीदार
بلاہر	بلاہر	बलाहर
کھٹک	کھٹک	खटक
شحنہ	شحنہ	शहनह
سپاہی	سپاهي	सिपाही
تولا	تولا	तोला
ہالی	هالي	हाली
چوکڑایت	چوکڑایت	चौकड़ायत
کھیڑاپتی	کھیڑاپتي	खेड़ापति
کمیرا	کميرا	कमेरा
مزدور	مزدور	मज़दूर
بیگاری	بيگاري	बेगारी
مہتر	مہتر	मिहतर

ऊपर के क्रम से लोगों को शकस्तह पढ़ने का कुछ २ अभ्यास होगा परंतु उसे पक्का करने के लिये आगे उर्दू अर्ज़ियां शकस्तह और नस्तालीक़ तिस पीछे देवनागरी में लिखी जांयगी कि जिस्से शकस्तह पढ़ने में मनुष्यों का उपकार हो ॥

१ अर्ज़ी शकस्तह

غریب پرور سلامت

جنم بھر فلانے کا شہرہ سنا تھا اور آس لگی

تلاش کرتے کرتے کالے کوسوں سے در دولت حضور تک آپہونچا

یعنی حضور وقت کے حاتم ہیں اور انگلستان سے ہندوستان

تک مالک اور حاکم مجھہ سے مفلس قلاش کی پرورش

بندہ کا حضور کے آگے کچھہ بڑی بات نہیں ہے زیادہ کیا عرض

کروں فقط

فدوی

१ अर्ज़ी नस्तालीक़

غریب پرور سلامت   جنم بھوم فدوی کا شہر پٹنا ھے
آدہ سیر آٹا تلاش کرتے کرتے کالے کوسون سے در دولت حضور
تک آپہونچا ھون حضور وقت کے حاتم ہین اور انگلستان سے
ہندوستان تک مالک اور حاکم مجھہ سے مفلس قلاش کی پرورش
بندگان حضور کے آگے کچھ بڑی بات نہین ھے فقط

१ अर्ज़ी नागरी

गरीब पर्वर सलामत

जन्म भूम फ़िदवी का शहर पटना है आध सेर आटा तलाश करते करते काले कोसों से दर्दौलत हुज़ूर तक आ पहुंचा हूं हुज़ूर वक़्त के हातम हैं और इंग्लिस्तान से हिंदुस्तान तक मालिक और हाकिम मझ से मु-फ़लिस क़ल्लांच की पर्वर्श बंदगान हुज़ूर के आगे कुछ बड़ी बात नहीं है +

२ अर्ज़ी शकस्तह

غریب پرور سلامت جس روز سے کہ فدوی تھانہ قنوج سے
تبدیل ہو کر کوتوالی شہر میں آیا ہے بسبب عدم موافقت آب و ہوا
شہر کے بیمار بنا رہتا ہے اور بیمار رہنے سے بنظر ظاہر دو نقصان ہیں
یعنی ایک تو بگونہ ہرج کار سرکار دوسرے فدوی بار بار عوضی دینے سے
سراسر زیر بار ہوتا ہے جو حضور حاکمی فرماویں تو فدوی کو اس
مکان سے اور کسی تھانہ میں تبدیل فرماویں زیادہ حد ادب

२ अर्ज़ी नस्तालीक़

غریب پرور سلامت جس روز سے کہ فدوی تھانہ قنوج سے
تبدیل ہو کر کوتوالی شہر میں آیا ہے بسبب عدم موافقت آب و ہوا شہر کے
بیمار بنا رہتا ہے اور بیمار رہنے سے بنظر ظاہر دو نقصان ہیں یعنی ایک تو
بگونہ ہرج کار سرکار دوسرے فدوی بار بار عوضی دینے سے سراسر
زیر بار ہوتا ہے جو حضور حاکمی فرماویں تو فدوی کو اس مکان سے
اور کسی تھانہ میں تبدیل فرماویں زیادہ حد ادب *

२ अर्ज़ीनागरी

ग़रीब पर्वर सलामत

जिस रोज़से फ़िदवी थानह क़न्नोजसे तबदील हो-
कर कोत्वाली शहर में आया है बसबब अ़दम मुवा-
फ़िक़त आबो हवाय इस शहरके बीमार बना र-
हता है और बीमार रहने से बनज़र ज़ाहिर दो नुक़-
सान हैं यअ़नी एक तो यकगूनह हर्ज कार सर्कार
दूसरे फ़िदवी बार बार अ़र्ज़ी देने से सरासर ज़ेरबा-
र होता है जो हुज़ूर हाकिमी फ़र्मावें तो फ़िदवी
को इस मकान से और किसी थानह में तबदील
फ़रमा देवें ज़ियादह हद्द अदब *

३ अर्ज़ी शकस्तह

غریب پرور سلامت میں زمیندار موضع سکندرپور کا عرض
کرتا ہوں کہ دیبی داس برہمن رہنے والے قصبہ سرنگر نے
میری مزروعہ زمین سے نمبر ۴۴ اور ۴۵ کے کہیت کا پٹہ اپنے نام
کروا کر اپنی دستخطی قبولیت لکہہ دینی ٹہرا اور اوس زمین میں
جو غلہ پیدا ہوا اوسے میرے شریکوں کے بہکانے سے اپنے گہر
لیگیا اور میں اوسکے پاس لگانکے تقاضے کیواسطے آدمی بہیجتا ہوں
تو اوسی بہانہ بتاتا ہے کہ جیسے دیا نہیں جاتا اور کہتا ہے کہ مجہپر دہرتا کی
بابت کچہ نہیں چاہئے اسواسطے امیدوار ہوں کہ پٹہ اور قبولیت
جو عرضی کے ساتہہ پیش کرتا ہوں اوسکو ملاحظہ فرماکر قبولیت
کے لکہے بموجب میرا روپیہ مدعی سے دلوایا جاوی فقط

३ अर्ज़ी नस्तालीक़

غریب پرور سلامت میں زمیندار موضع سکندرپور کا
عرض کرتا ہوں کہ دیبی داس برہمن رہنے والے قصبہ سری نگر
کے نے میری مزروعہ زمین سے نمبر ۴۴ اور ۴۵ کے دو کھیت کا
پٹہ اپنے نام کرواکر اپنی دستخطی قبولیت لکھہ دینی تھی اور اُس
زمین میں غلّہ پیدا ہوا اوسے میرے شریکوں کے بہکانے
سے اپنے گھر لیگیا اور میں اُسکے پاس لگتی کے تقاضے کے
واسطے آدمی بھیجتا ہوں تو اوسے بہانے بتاتا ہے پر کچھہ دیا
نہیں چاہتا اور کہتا ہے کہ مجھہ پر دھرتی کی بابت کچھہ نہیں
چاہیئے اِسواسطے امیدوار ہوں کہ پٹہ اور قبولیت
جو عرضی کے ساتھہ پیش کرتا ہوں اوسکو ملاحظہ فرماکر
قبولیت کے لکھے بموجب میرا روپیہ مدعی سے دلوایا جاوے فقط

३ अ़र्ज़ी नागरी

गरीब पर्वर सलामत

मैं ज़मींदार मौज़अ़ सिकंदरपूर का अ़र्ज़ करता हूं कि देबीदास बिरहमन रहने वाले क़सबह सिरीनगर के ने मेरी मज़रूअ़ः ज़मीन से लंबर ४० और ४५ के दो खेत का पट्टह मुझ से अपने नाम करवाकर अपनी दस्तख़ती क़बूलियत लिख दीनी थी और उस ज़मीन में ग़ल्लह पैदा हुआ उसे मेरे शरीकों के बहकाने से अपने घर ले गया और में उसके पास लगती के तक़ाज़ाय के वास्ते आदमी भेजता हूं तो उसे बहाने बताता है पर कुछ दिया नहीं चाहता और कहता है कि मुझ पर धरती की बाबत कुछ नहीं चाहिये इस वास्ते उम्मेदवार हूं कि पट्टह और क़बूलियत जो अ़र्ज़ी के साथ पेश करता हूं उसको मुला-

हज़्रत फ़र्माकर क़बूलियत के लिखे बमूजिब मेरा रुपैया मुझे मुद्दई से दिलाया जावे - फ़क़त *

—०○०—

इस पुस्तक के आरंभ में जो भूमिका हिंदी भाषा में लिखी है उसका ठीक आशय नीचे फ़ारसी भाषा और फ़ारसी अक्षरों में लिखा है उसे पढ़ लोग हिंदी और फ़ारसी का अंतर जानेंगे और उसके पढ़ने में लोगों को भ्रम न हो इस लिये फ़ारसी के पीछे वे के वे शब्द देवनागरी में लिखे हैं और तिस पीछे वही आशय उर्दू में लिखा गया है कि जिस्से लोगों को निश्चय हो जो उर्दू बोली में हिंदी और फ़ारसी आदि के शब्द हैं और उस उर्दू के पढ़ने की सुगमता के लिये आगे उसी उर्दू को देवनागरी में लिख दिया है *

—०○०—

بیان لفظ اُردو

لفظ اُردو ترکی است بمعنی چھاونی واکثر زبان اُردو بنقوش
فارسی ثبت کرده میشود لیکن قواعد او با قواعد ہندی ربطی
دارند و زبان اُردو از چند زبانان دیگر یعنی عربی فارسی
ترکی ہندی سنسکرت مرکب گردیده است اگرچه در اصطلاحات
کچہری و دیگر کاروبار سرکاری الفاظہائیکه مستعمل اند آن ہا
اکثر عربی و فارسی اند لیکن آن الفاظہا که عوام الناس بر زبان
می آرند و ہمچنان نام طیور از ہندی و سنسکرت اند *

غرض از تالیف این کتاب این است که بذریعه آن کسانیکه از ہندی
خواندن سوادی دارند بغیر اعانت دیگری در خواندن اُردو
مہارتے پیدا کنند و چون بخوبی ازین حظی بردارند پس کتب
قواعد وغیره را نیز برخوانند *

و برای اعانت و تسہیل خواندن اُردو این چنین کتاب لغات
طیار کرده شده است که دران قواعد اُردو و نیز اکثر لغات اُردو
مرقوم اند و معنی آن در زبان ہندی و دیوناگری ثبت کرده شده است *

مبدء ظهور زبان اُردو این است تا وقتیکه مسلمانان بهندوستان
پا نه نهاده عملداری خود نکرده بودند تا آنزمان درین ملک راجه
و رعیت همه هندو بودند و در بخش متوسط هندوستان
و بخش شمالی او که از ستلج بطرف دکن و مشرق ملحق است
دران تمامی بلاد زبان هندی بود لیکن چون مسلمانان
از فارس بهندوستان درآمدند درآن آوان بزبان
ملک خود که فارسی بود حرف می زدند بعد چندی چون
از مردمان اینجا معامله و رسم آمد و شد پیدا شد درینصورت
درمیان ایشان زبانی جدید رواج یافت که آنرا مردمان
طرفین می فهمیدند پس آنزبان بود و در ابتدا رواج اُردو
بدین نهج شد بعد ازان چون در فوج سلاطین مغلیه
اهالیان پورب خیلی ملازم بودند بذریعه آنها در تمامی
هندوستان زبان اُردو منتشر گردید ✣

बयान लफ़्ज़ उर्दू

लफ़्ज़ उर्दू तुर्की अस्त बमानी छावनी व अ-
कसर ज़ुबान उर्दू ब नक़्श फ़ारसी सब्त कर्दह मे-
शवद लेकिन क़वाइदि ऊ बा क़वाइद हिंदी र-
बते दारंद व ज़ुबान उर्दू अज़ चंद ज़ुबानानि दी-
गर यानी अरबी फ़ारसी तुर्की हिंदी संस्कृत मु-
रक्कब गर्दीदह अस्त अगरचिह दर इस्तलाहात
कचहरी व दीगर कारोबार सर्कारी अल्फ़ाज़हा
मुस्तअमिल अंद आंहा अक्सर अरबी व फ़ार
सी अंद लेकिन आं अल्फ़ाज़हा कि अवामुल-
नास बर ज़ुबान मेआरंद व हमचुनां नाम तयू-
र अज़ हिंदी व संस्कृत अंद ॥

ग़रज़ अज़ तालीफ़ ईं किताब ईं नस्त कि ब-
ज़रिये आं कसाने कि अज़ हिंदी ख़्वांदन सवादे
दारंद बग़ैर अआनत दीगरे दर ख़्वांदन उर्दू महा-
रते पैदा कुनंद व चूं बख़ूबी अज़ीं हज़्ज़े बर्दारंद

पस कुतुब क़वाइद वग़ैरह रा नीज़ बख़्वानंद व बराय आ़ानत व तसहील ख़्वांदने उर्दू ई चुनी किताब लुग़ात तय्यार कर्दह शुदह अ-स्त कि दरां क़वाइद उर्दू व नीज़ अकसर लुग़ात उर्दू मर्क़ूम अंद वमानी आं दर ज़ुबान हिंदी व देवनागरी सब्त कर्दह शुदह अस्त ॥

मुद्दए ज़हूर ज़ुबान उर्दू ई नस्त ता वक़्ते कि मुसलमानानि ब हिंदुस्तान पा न निहादह अ़मलदारी ख़ुद न कर्दह बूदंद ता आं ज़मान दरीं मुल्क राजह व रऐयत हमह हा हिंदू बूदंद व दर बख़्श मुतवस्सत हिंदुस्तान बख़्श शिमालीऊ कि अज़ सतलज बतर्फ़ दखन व मशरक़ मुलहक़ अस्त दरां तमामी बलाद ज़ुबान हिंदी बूद लेकिन चूं मुसलमानानि अज़ फ़ारस बहिंदुस्तान दर आमदंद दरां आवान बज़ुबान मुल्क ख़ुद कि फ़ारसी बूद हर्फ़ मेज़दंद

बअ़द चंदे चूं अज़ मर्दुमान ईंजा मुआ़मिलह व रस्म आमद वशुद पैदा शुद दरईं सूरत दरमियान एशां ज़ुबान जदीद रिवाज याफ़्त [?] कि आंरा मर्दुमानि तरफ़ैन मेफ़हमीदंद पस आं ज़ुबां बूद व दर इब्तदा रिवाज उर्दू बिदीं नहज शुद बअ़द अज़ां चूं दर फ़ौज सुलातीन मुग़लियह अहालियाने पूरब ख़ैले मुलाज़िम बूदंद बज़रियह आंहा दर तमामी हिंदुस्तान उर्दू ज़ुबान मुंतशर गर्दीद +

لفظ اُردو یہہ ترکي زبان کا ھی اور معني اوسکے چھاوني کے ہین اردو زبان اکثر فارسي حرفون مین لکھي جاتي ھی لیکن اُوسکے قاعدے ہندي کے قاعدون سے ملتے ھوئے ہین اور وہ زبان کئي زبانون یعني عربي فارسي ترکي ہندي سنسکرت کے لفظون سے بني ھوئي ھی اور کچہري کي اصطلاحین اور سرکاري کاروبار مین جو لفظ بولے جاتے ہین

وے اکثر عربي فارسي کے ہين اور جو لفظ عام لوگون کي بول چال مين ہين وہ اور اکثر نام جانورون کے بھي ہندي اور سنسکرت ہين *

غرض اِس کتاب کے بنانے سے يہہ ھي کہ اِسکے وسيلہ سے ہندي پڑھے ھوئے لوگ بغير دوسرے کي مدد کے اُردو کے پڑھنے مين ربط پيدا کرسکين اور جب بخوبي ربط اِسمين پيدا کرلين تب اُردو کے قواعد وغيرہ کي کتابين بھي پڑہ سکين *

اُردو پڑھنے کي مدد اور سہولت کيواسطے ايک ايسي کتاب لغتون کي بنائي گئي ھي کہ جسمين اُردو کے قاعدون کي باتين اور بہت سے لفظ بھي لکھے گئے ہين اور اُونکے معني ہندي زبان اور ديوناگري مين لکھے گئے ہين *

اُردو زبان کي اصل يہہ ھي کہ جب تلک مسلمانون نے ہندوستان مين آنکر عملداري نہ کي تھي تب تلک اِس ملک مين راجہ اور رعيت سب ہندو تھے اور ہندوستان کا بيچ حِصّہ اور شمالي حِصّہ جو ستلج سے دکن اور شرق کي طرف ھي

وہان کے سب ملکون بین زبان ہندي تھي لیکن جب مسلمان
فارس سے ہندوستان مین آئے تب وے لوگ اپنے ملک
کي زبان فارسي هي بولتے تھے بعد چند روز کے جب یہان
کے لوگون سے اونکو معاملہ پڑا اور آپسمین آنے جانے لگے تب
اُنمین ایسي بولي نے رواج پکڑا کہ اوسکو دونو طرف کے
لوگ سمجھنے لگے پس وہ زبان اُردو ٹھہري اوّل تو اُردو
زبان نے اِسطرح سے رواج پکڑا بعد ازان سلاطین مغلیہ
کي فوج مین اکثر پوربي لوگ نوکر تھے اُونکے سبب سے اُردو زبان
تمام ہندوستان مین پھیل گئي *

लफ़्ज़ उर्दू यह तुर्की ज़ुबान का है मा:नी
उसके छावनी के हैं उर्दू ज़ुबान अकसर फ़ारसी
हर्फ़ों में लिखी जाती है लेकिन उसके क़ाइदे हिं-
दी के काइदों से मिलते हुए हैं और वह ज़ुबान क-
ई ज़ुबानों या:नी अरबी फ़ारसी तुर्की हिंदी संस्कृत
के लफ़्ज़ों से बनी हुई है और कचहरी की इस्तला-

हैं और सर्कारी कारोबार में जो लफ़्ज़ बोले जाते हैं वे अकसर अ़रबी फ़ारसी के हैं और जो लफ़्ज़ आ़म लोगों की बोल चाल में हैं वे और अकसर नाम जानवरों के भी हिंदी और संस्कृत हैं ✣

ग़रज़ इस किताब के बनाने से यह है कि इस के वसीलह से हिंदी पढ़े हुए लोग बग़ैर दूसरे की मदद के उर्दू के पढ़ने में रब्त पैदा कर सकें और जब बख़ूबी रब्त इसमें पैदा कर लें तब उर्दू के क़वाइद वग़ैरह की किताबें भी पढ़ सकें ✣

उर्दू पढ़ने की मदद और सहूलत के वास्ते एक ऐसी किताब लुग़तों की बनाई गई है कि जिस में उर्दू के क़ाइदों की बातें और बहुत से लफ़्ज़ भी लिखे गये हैं और उनके मा़नी हिंदी ज़ुबान और देवनागरी में लिखे गये हैं ✣

उर्दू ज़ुबान की अ़स्ल यह है कि जब तलक मुसलमानों ने हिंदुस्तान में आनकर अ़मलदारी

न की थी तब तलक इस मुल्क में राजह और रऐ-
यत सब हिंदू थे और हिंदुस्तान का बीच का हि-
स्सह और शिमाली हिस्सह जो कि सतलज से द-
खन और मशरक़ की तरफ़ है वहां के सब मुल्कों
में ज़ुबान् हिंदी थी लेकिन् जब मुसलमान फ़ार-
स से हिंदुस्तान में आये तब वे लोग अपने मुल्क
की ज़ुबान् फ़ारसी ही बोलते थे बअ़द चंद रोज़ के
जब यहां के लोगों से उन को मुआमिलह पड़ा और
आपस में आने जाने लगे तब उन में ऐसी बोली ने
रिवाज पकड़ा कि उस को दोनों तरफ़ के लोग स-
मझने लगे पस वह ज़ुबान् उर्दू ठहरी अव्वल तो
उर्दू ज़ुबान ने इस तरह से रिवाज पकड़ा बअ़द अ-
ज़ां सुलातीन मुग़लियह की फ़ौज में अक्सर पू-
रबी लोग नौकर थे उनके सबब से उर्दू ज़ुबान
तमाम हिंदुस्तान में फैल गई ॥

सूचीपत्र हिंदी पुस्तकों का जो सर्कारी पुस्तकालय में बिकाऊ हैं स्थान आगरा

नाम पुस्तक	मोल
गणित निदान हिसाब जोड़ आदि से दशम लव आदि की रीतें और उनके सिद्धांतों का बर्णन	/।।।)
क्षेत्र चंद्रिका पहला भाग धरती की माप की रीतें ...	/।।)
गणित प्रकाश पहला भाग जोड़ से ले त्रैराशिक तक की रीतें हैं	/।)
तथा दूसरा भाग त्रैराशिक से घन मूल तक की रीतें हैं	/।।।)
तथा तीसरा भाग ब्योपार के हिसाब से साझा तक ...	/।।)
तथा चौथा भाग दशम लव से इष्ट कर्म तक	/।।।)
रेखा गणित पहला भाग पहले अध्याय से दूसरे तक ...	/।।।)
तथा दूसरा भाग तीसरे अध्याय से चौथे तक	/।।।)
तथा तीसरा भाग छठा अध्याय	/।।।)
रेखा गणित सिद्ध फलोदय पहले दूसरे तीसरे और चौथे छठे अध्याय के प्रश्न	/१)
हिंदी बीज गणित पहला भाग बीज गणित संबंधीय परिभाषाओं से ले एक वर्ण समीकरण तक	/।।)
तथा दूसरा भाग एक वर्ण से गुणोत्तर श्रेढी तक	/।।।)
शिक्षा मंजरी पहला भाग शिक्षा के विषय में	/।।।)
तथा दूसरा भाग पुस्तकावलोकन और बोल चाल की रीतों के विषय में	/।।।)
विद्यांकुर स्टष्टि के विषय में	/।)
खगोलसार ग्रहों के विषय में	/।।)
भारतवर्षीय इतिहास हिन्दुस्थान के राजाओं के विषय में	/।-)
शाला पद्धति पाठकों के पढ़ाने के उपदेश में ...	/।)

नाम पुस्तक	मोल
धर्म सिंह का वृत्तांत एक ज़मींदार की कहानी ...	-)
सूरजपुर की कहानी एक गांव की कहानी के विषय में	६ पाई
ईश्वरता निदर्शन सृष्टि की अपूर्वता के विषय में ...	-)६ पाई
भाषा चंद्रोदय हिंदी व्याकरण के विषय में	=)
समय प्रबोध समय के विषय में	-)
बालोपदेश अक्षर लगमात के विषय में	≡)
बाल बोध छोटे २ पाठों के विषय में	६ पाई
छंदोदीपिका भाषा छंदों के विषय में	≡)
अक्षर दीपिका अक्षर लगमात के विषय में	-)
पत्र मालिका चिट्ठी लिखने की रीति में	६ पाई
किसानोपदेश किसानों की शिक्षा में	-)
चित्रकारीसार पहला भाग चित्र बनाने के विषय में	≡)
विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक अक्षर लगमात और गणित आदि के विषय में	=)
सार्थ सिद्धो व्याकरण में	-)
माप प्रबंध ख़सरे की पैमाइश के विषय में	≡)
दशमलव दीपिका दशम लव के विषय में	-)॥